ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 181-185

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

# 21 वीं सदी के शिक्षक और शिक्षण दक्षताएं

1. मु0 मंशुर आलम
2. डॉ0 मसुद आलम खान

1. शोध अध्येता– शिक्षाशास्त्र विभाग, एल0एन0एम0यू0, 2. एसोसिएट प्रोफेसर– डॉ0 जाकिर हुसैन टीचर ट्रेनिंग कालेज, दरभंगा (बिहार) भारत

Received-05.02.2023, Revised-11.02.2023, Accepted-16.02.2023 E-mail: mdmansooralam032@gmail.com

***सारांशः*** ***इस आलेख का मुख्य उद्देश्य शिक्षक और शिक्षण दक्षताओं पर विचार करना है। इसके लिये हमने 21वीं सदी की शैक्षिक चुनौतियों का समना करने में शिक्षकों का स्थान और महत्वपूर्ण निर्देशात्मक कौशल को समझने का प्रयास किया है। इसके लिये हमने निम्नलिखित मुद्दों पर शोध कियाः छात्रों के कौशलय शिक्षकों के पेशेवर विकास के स्तरय शिक्षकों की शैक्षणिक संस्कृतिय शैक्षणिक नवाचार, और 21वीं सदी की शिक्षण क्षमताएं या दक्षताएं।***

***हम अक्सर 21वीं सदी के शिक्षार्थियों के बारे में सुनते हैं और वह ज्ञान तथा कौशल जिसकी हमारे छात्रों को भविष्य में आवश्यकता होगी। 21वीं सदी के शिक्षकों को हमारे छात्रों को तैयार करने के लिए कौन से निर्देशात्मक कौशल और शिक्षण दक्षताओं की आवश्यकता होगी? वे अतीत में आवश्यक कौशल शिक्षकों से किस प्रकार भिन्न हैं?***

***कुंजीभूत शब्द– निर्देशात्मक कौशल, कौशलय शिक्षकों, पेशेवर विकास, शैक्षणिक संस्कृतिय, शैक्षणिक नवाचार, दक्षताएं।***

हाल के वर्षों में, शिक्षा की गुणवत्ता में काफी बदलाव आया है। यदि, पहले, विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को कुछ प्रकार के ज्ञान प्रदान करना था, जिन्हें बाद में लागू करने की उम्मीद की गई थी, तो आज विश्वविद्यालय मुख्य रूप से 'जीवन कौशल' पर केंद्रित हैं। हमारा उद्देश्य छात्रों को स्वयं ज्ञान प्राप्त करना सिखाना और उन तरीकों से काम करना है जो उन्हें नए विचारों के साथ आने में सक्षम बनाते हैं। नए विचार उत्पन्न करना आधुनिक समाज का एक प्रमुख सिद्धांत है। हमें ऐसे पेशेवरों की जरूरत है जो सांस्कृतिक रूप से सक्षम, प्रतिभाशाली, अभिनव और रचनात्मक समस्या–समाधानकर्ता, कुशल और महत्वपूर्ण विचारक हों। नई प्रौद्योगिकियां महत्वपूर्ण सोच को प्रोत्साहित करने का अवसर देती हैं ।

हमें छात्रों को कौशल प्रदान करना चाहिए जो उन्हें एक टीम में सहयोगात्मक और संवेदनशील तरीकें से काम करने, निर्णय लेने वाले बनने, योजना बनाने और अपने समय को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने, एक दूसरे की बात सुनने और सही समय पर सही संचार रणनीति चुनने में मदद करें। इस आलेख के द्वारा हम समझ पाते हैं कि इन नई शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, हमें 21वीं सदी के कौशल की आवश्यकता है।

समाज में शिक्षक के स्थान और महत्व को कभी भी कम करके आंका नहीं जा सकता है। औपचारिक शिक्षण अधिगम व्यवस्था में एक शिक्षक एक केंद्रीय व्यक्ति होता है। वह एक दूरबीन है, जिसके माध्यम से लोग छात्र के दूर के भविष्य को देख सकते हैं। वह अंतिम एजेंट है जो ज्ञान का वितरण करता है, समय सारिणी तैयार करता है, पठन सामग्री का चयन करता है, सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करता है, और विद्यार्थियों को उनकी कठिनाइयों और व्यक्तिगत समस्याओं को दूर करने में मदद करता है। वह है जो मानक निर्धारित करता है, वांछनीय दृष्टिकोण बनाता है और छात्र व्यवहार को अनुमोदित या अस्वीकार करता हैं।

भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने रिपोर्ट के शुरुआती वाक्य में ठीक ही टिप्पणी की है कि भारत की नियति अब उसकी कक्षा में आकार ले रही है। बयान में कहा गया है कि "किसी भी व्यक्ति को उसके शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठाया जा सकता है" एक सर्वकालिक सत्य है।

हाल के वर्षों में भारत ने समग्र राष्ट्र विकास के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका पर एक नया और अधिक आलोचनात्मक रूप लिया है। शिक्षा के लक्ष्य विकास के राष्ट्रीय लक्ष्यों का अनुसरण करते हैं, जिसका उद्देश्य मानव संसाधन विकास है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के समुचित रूप से संगठित कार्यक्रम के माध्यम से मानव संसाधन का विकास संभव है।

भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने कहा, "शिक्षकों की गुणवत्ता, योग्यता और चरित्र शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है।" निस्संदेह, शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों और शिक्षक शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता का प्रत्यक्ष परिणाम है।

**दक्षता या योग्यता–** शिक्षण दक्षता या योग्यता के अर्थ को संबोधित करने से पहले, हमें पहले क्षमता या योग्यता का अर्थ स्थापित करना चाहिए। योग्यता एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल अलग–अलग लोगों द्वारा अलग–अलग संदर्भों में बड़ें पैमाने पर किया जाता हैय इसलिए, इसे विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। अध्यापक शिक्षा और नौकरी का प्रदर्शन दो संदर्भ हैं, जिनमें इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। योग्यताएं एक "योग्यता–आधारित" अध्यापक शिक्षा की आवश्यकताएं हैं और इसमें वह ज्ञान, कौशल और मूल्य शामिल हैं, जो एक शिक्षक–प्रशिक्षु को अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम के सफल समापन के लिए प्रदर्शित करना चाहिए।

**अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

योग्यता की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:

1. योग्यता में एक या एक से अधिक कौशल होते हैं, जिनकी महारत योग्यता की प्राप्ति को सक्षम बनाती है।
2. योग्यता उन तीनों डोमेन से जुड़ी होती है, जिनके तहत प्रदर्शन का आकलन किया जा सकता है: ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण।
3. प्रदर्शन के आयाम को धारण करने वाली, दक्षताएँ देखने योग्य और प्रदर्शन योग्य हैं।
4. चूँकि क्षमताएँ देखने योग्य हैं, वे मापने योग्य भी हैं। शिक्षक के प्रदर्शन से योग्यता का आकलन संभव है। शिक्षण दक्षताओं के लिए समान मात्रा में ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन कुछ के लिए नहीं। कुछ दक्षताओं में कौशल या दृष्टिकोण की तुलना में अधिक ज्ञान शामिल हो सकता है, जबकि कुछ दक्षताएँ अधिक कौशल या प्रदर्शन आधारित हो सकती हैं।

**शिक्षण दक्षता या योग्यता–** शिक्षण योग्यता शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के दौरान विभिन्न शिक्षण कौशल के अनुप्रयोग को संदर्भित करती है। एक सक्षम शिक्षक सभी शिक्षण कौशलों को लागू करता है, छात्रों के स्तर और प्रकृति को समझता है और तदनुसार शिक्षण को बदल देता है। शिक्षण क्षमता में विभिन्न शिक्षण कौशलों का प्रभावी उपयोग शामिल है। प्रश्न पूछना, उद्दीपक परिवर्तन, निर्देश, स्पष्टीकरण और पुनर्बलन शिक्षण कौशलों में से कुछ हैं। इन सभी शिक्षण कौशलों को मूल शिक्षण कौशल माना जाता है। छात्र शिक्षकों को इन मुख्य कौशलों के प्रभावी उपयोगों में प्रशिक्षित किया जाता है। इन कौशलों का प्रयोग शिक्षकों को सक्षम बनाता है।

शिक्षण दक्षताएँ स्पष्ट, प्रदर्शित करने योग्य और बोधगम्य विशेषताएँ हैं, जो शिक्षण पेशेवरों के लिए एक शिक्षार्थी के अनुकूल और अनुकूल सीखने के माहौल का निर्माण करने के लिए आवश्यक हैं। भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के विशाल विस्तार की मांग है कि एक शिक्षक हर कार्य में उच्च स्तर की व्यावसायिकता प्रदर्शित करे और वह कक्षा के अंदर और बाहर प्रदर्शन करे। यद्यपि प्रशिक्षण और अनुभव से शिक्षकों को दक्षता प्राप्त होती है, लेकिन एक शिक्षक के लिए पूर्ण समामेलन में सभी दक्षताओं से अवगत कराना असंभव है। एक सक्षम शिक्षक के पास उद्देश्यों, स्वभाव और सौहार्द के सेट की स्पष्ट दृष्टि होती है। एक शिक्षक को जो भी योजना बनाई जाती है, उसे सावधानीपूर्वक निष्पादित करने की आवश्यकता होती है और मामलों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक की सामग्री या विषय की प्रस्तुति को छात्रों की प्रतिक्रिया और ध्यान के लिए प्रयास करना चाहिए और प्रत्येक छात्र को प्रेरित करने में सक्षम होना चाहिए।

एक योग्यता सिर्फ ज्ञान और कौशल से कहीं अधिक है। इसमें एक विशेष संदर्भ में मनोसामाजिक संसाधनों (कौशल और दृष्टिकोण सहित) को खींचकर और जुटाकर जटिल मांगों को पूरा करने की क्षमता शामिल है। एक शिक्षक की उत्कृष्टता की खोज के लिए योग्यता आवश्यक है।

आज की दुनिया की जटिल चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षकों को व्यापक दक्षताओं की आवश्यकता है। शिक्षण योग्यता एक प्रभावी प्रशिक्षण प्रक्रिया का एक अंतर्निहित तत्व है, जो किसी विशेष देश या दुनिया के कल्याण में योगदान करने की इच्छा रखता है। शैक्षिक प्रक्रिया में केंद्रीय आंकड़े शिक्षक हैं। प्रशिक्षण और शिक्षा की सफलता उनकी तैयारी, विद्वता और प्रदर्शन की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

**पेशेवर शिक्षकों के शिक्षण कौशल और जीवन भर सीखने की क्षमता में निम्नलिखित शामिल हैं–**

1. जटिल शैक्षणिक कर्तव्यों का पालन करने के लिए।
2. अच्छी तरह से बोलने के लिए, अच्छे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में, स्थिर और सहनशील।
3. युवा पीढ़ी के साथ काम करने की प्रवृत्ति, अच्छा संचार और अवलोकन कौशल, चातुर्य, एक विशद कल्पना और नेतृत्व (शमेलेव, 2002)।

अपने पेशेवर करियर के दौरान, शिक्षक पेशेवर क्षमता के चरम को प्राप्त करने के लिए पेशेवर विकास के निम्नलिखित स्तरों से गुजरते हैं :

**पहला स्तर–** शैक्षणिक क्षमता – विषय के विस्तृत ज्ञान की विशेषतायें।

**दूसरा स्तर–** शैक्षणिक कौशल – सिद्ध शिक्षण कौशल।

**तीसरा स्तर–** शैक्षणिक रचनात्मकता – शैक्षिक गतिविधियों में नई विधियों और तकनीकों के कार्यान्वयन द्वारा चिह्नित।

**चौथा स्तर–** शैक्षणिक नवाचार – अनिवार्य रूप से नए, प्रगतिशील सैद्धांतिक विचारों, सिद्धांतों और प्रशिक्षण और शिक्षा के तरीकों (बुहरकोवा, गोर्शकोवा, 2007) के समावेश द्वारा प्रतिष्ठित।

शिक्षा के स्कूलों ने सांस्कृतिक रूप से सक्षम शिक्षकों को विकसित करने की आवश्यकता को स्वीकार किया है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

शैक्षणिक संस्कृति, इसलिए, एक सक्षम शिक्षक का एक अभिन्न अंग है। शैक्षणिक संस्कृति में तीन घटक होते हैं:

1. स्वयंसिद्ध घटक, जिसका अर्थ है शिक्षक शैक्षणिक कार्यों के मूल्यों की स्वीकृति।
2. तकनीकी घटक, जो विभिन्न शैक्षणिक कार्यों को हल करने की सुविधा प्रदान करता है।
3. अनुमानी घटक, जिसमें लक्ष्य निर्धारित करना, योजना बनाना, विश्लेषण करना और आत्म–आलोचना करना शामिल है। यह शैक्षणिक गतिविधि का रचनात्मक हिस्सा है (इवानित्सकी, 1998)।

**शैक्षणिक नवाचार–** शैक्षिक नवाचार ने दुनिया भर में अधिक ध्यान आकर्षित किया है और कई देशों ने पहले से ही शैक्षिक सुधारों को शुरू कर दिया है, जिसका उद्देश्य शिक्षा के लक्ष्यों और प्रथाओं दोनों को बदलना है। उम्मीद है कि सीखने और शिक्षण प्रक्रिया में आईसीटी (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) को शामिल करके इस तरह के नवाचारों का लाभ उठाया जा सकता है या उनका समर्थन किया जा सकता है। इस तरह के नवाचार छात्रों के सीखने के अनुभवों को मौलिक रूप से बदल रहे हैं।

नवाचार शैक्षणिक प्रणाली को बदल देता है, शिक्षण प्रक्रिया और उसके परिणामों में सुधार करता है। नवाचार के उद्देश्यों में शिक्षण और शैक्षिक गतिविधि में प्रेरणा बढ़ाना, प्रति पाठ अध्ययन की गई सामग्री की मात्रा में वृद्धि, त्वरित प्रशिक्षण और अधिक प्रभावी समय प्रबंधन शामिल हैं। अधिक प्रगतिशील तरीकों की शुरूआत, सक्रिय शिक्षण रूपों का उपयोग और नई प्रशिक्षण प्रौद्योगिकियां नवाचार के नियमित क्षेत्र हैं।

वास्तविक नवाचार मानव विकास की प्रक्रियाओं के नए ज्ञान से निकलते हैं, इष्टतम परिणाम प्राप्त करने के लिए नए सैद्धांतिक दृष्टिकोण और व्यावहारिक प्रौद्योगिकियां प्रदान करते हैं। शैक्षणिक नवाचार शैक्षिक प्रतिमानों के प्रतिस्थापन की मांग करता है।

सक्षम शिक्षक के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण घटक शैक्षणिक अनुभव है। उन्नत शैक्षणिक अनुभव को स्थानांतरित किया जा सकता है और दूसरों को दिया जा सकता है, साथ ही साथ प्रशिक्षण तकनीकों और विधियों में पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है ताकि साथी शिक्षकों द्वारा उपयोग किया जा सके, अतिरिक्त समय व्यय के बिना उच्च परिणाम प्रदान करता है (कान–कालिक, निकंदरोव, 1990)।

21वीं सदी की दक्षताओं को 21वीं सदी के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी होने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और .ष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया गया है। शिक्षण की प्रमुख दक्षताओं में प्रशिक्षण को शामिल करने के लिए शिक्षक की तैयारी और व्यावसायिक विकास पर फिर से काम किया जाना चाहिए। 21वीं सदी के शिक्षक को यह जानने की जरूरत है कि छात्रों के लिए तकनीकी रूप से समर्थित सीखने के अवसर कैसे प्रदान करें और जानें कि तकनीक छात्रों के सीखने में कैसे मदद कर सकती है।

**21वीं सदी की शिक्षण क्षमताएं–**

1. **शिक्षक नेतृत्व का प्रदर्शन करते हैं,**

**शिक्षक कक्षा में नेतृत्व करते हैं–**

– विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन–डेटा मापने के लक्ष्यों का उपयोग करके छात्र की प्रगति का मूल्यांकन करना।
– कक्षा और निर्देशात्मक योजनाओं को विकसित करने के लिए उपयुक्त डेटा पर ड्राइंग।
– एक सुरक्षित और व्यवस्थित कक्षा बनाए रखना जो छात्र सीखने की सुविधा प्रदान करता है, तथा
– छात्र व्यवहार का सकारात्मक प्रबंधन, विघटनकारी या खतरनाक व्यवहार को कम करने और कम करने के लिए प्रभावी संचार, और सुरक्षित और उपयुक्त एकांत और संयम तकनीक।

**शिक्षक स्कूल में नेतृत्व का प्रदर्शन करते हैं–**

– सहयोगी और कॉलेजियम व्यावसायिक शिक्षण गतिविधियों में संलग्न होना।
– स्कूल सुधार योजना की विशेषताओं या महत्वपूर्ण तत्वों की पहचान करना, तथा
– स्कूल सुधार योजना में संबोधित किए जाने वाले आवश्यकता के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए उपयुक्त डेटा का उपयोग करने की क्षमता प्रदर्शित करना।

**शिक्षक शिक्षण पेशें का नेतृत्व करते हैं–**

– पेशेवर विकास और विकास गतिविधियों में भाग लेना तथा
– व्यावसायिक संबंध और नेटवर्क विकसित करना।

**शिक्षक स्कूलों और छात्रों के लिए वकालत करते हैं–**

– नीतियों और प्रथाओं को लागू करना और उनका पालन करना छात्रों के सीखने को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

**2. शिक्षक छात्रों की एक विविध आबादी के लिए एक सम्मानजनक वातावरण स्थापित करते हैं।**

**शिक्षक एक ऐसा वातावरण प्रदान करते हैं जिसमें प्रत्येक बच्चे का देखभाल करने वाले वयस्कों के साथ एक सकारात्मक, पोषण संबंध होता है–**

– सकारात्मक और पोषण सीखने के माहौल को बनाए रखना।

**शिक्षक स्कूल समुदाय में और दुनिया में विविधता को गले लगाते हैं–**

– ऐसी सामग्रियों या पाठों का उपयोग करना जो रूढ़ियों का प्रतिकार करते हैं और सभी संस्तियों के योगदान को स्वीकार करते हैं।

– निर्देश में विभिन्न दृष्टिकोणों को शामिल करना तथा

– विविधता के प्रभाव को समझना और उसके अनुसार योजना बनाना।

**शिक्षक छात्रों के साथ व्यक्तियों के रूप में व्यवहार करते हैं–**

– सीखने के माहौल को बनाए रखना, जो हर छात्र की उच्च उम्मीदों को व्यक्त करता है।

**शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लाभ के लिए अपने शिक्षण को निम्नलिखित द्वारा अनुकूलित करते हैं–**

– सभी छात्रों की विशेष सीखने की जरूरतों का समर्थन करने के लिए विशेषज्ञों के साथ सहयोग करना और संसाधनों का उपयोग करना तथा

– विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए प्रभावी शिक्षण गतिविधियाँ प्रदान करने के लिए शोध–सत्यापित रणनीतियों का उपयोग करना।

**3. शिक्षक अपने द्वारा पढ़ाई जाने वाली सामग्री को जानते हैं–**

**शिक्षक अध्ययन के एक प्रभावी पाठ्यक्रम के आधार पर पाठ विकसित और लागू करते हैं–**

– छात्र सीखने को बढ़ाने के लिए पूरे पाठ्यक्रम और सामग्री क्षेत्रों में प्रभावी साक्षरता निर्देश को एकीकृत करना।

**शिक्षक निम्नलिखित द्वारा अपनी शिक्षण विशेषता के लिए उपयुक्त सामग्री का सम्मान करते हैं–**

– उनकी विशेषता में सामग्री ज्ञान के उचित स्तर का प्रदर्शन तथा

– छात्रों को उनके ज्ञान का विस्तार करने और उनकी प्राकृतिक जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए सामग्री क्षेत्र की जांच करने के लिए प्रोत्साहित करना।

शिक्षक दिखाते हैं कि वे सामग्री क्षेत्रों/अनुशासन की परस्पर संबद्धता को पहचानते हैं–

– अपने विषय के ज्ञान को अन्य विषयों से जोड़कर प्रदर्शित करनाय तथा

– विषय के बारे में वैश्विक जागरूकता से संबंधित।

4. शिक्षक अपने छात्रों के लिए सीखने की सुविधा प्रदान करते हैं

**शिक्षक दिखाते हैं कि वे उन तरीकों को जानते हैं जिनमें सीखना होता है और उनके छात्रों के बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास के उपयुक्त स्तर हैं–**

– अलग–अलग छात्रों के विकासात्मक स्तरों की पहचान करना और तदनुसार निर्देश की योजना बनानाय तथा

– छात्रों की ताकत और कमजोरियों को दूर करने के लिए आवश्यक संसाधनों का आकलन और उपयोग करना।

**शिक्षक अपने छात्रों के लिए उपयुक्त निर्देश की योजना बनाते हैं–**

– छात्र के प्रदर्शन की निगरानी करने के लिए सहकर्मियों के साथ सहयोग करना और सांस्कृतिक अंतर और व्यक्तिगत सीखने की जरूरतों के लिए निर्देश को उत्तरदायी बनाना।

**शिक्षक निम्नलिखित द्वारा अपनी कुशाग्रता और बहुमुखी प्रतिभा दिखाते हैं–**

– सभी छात्रों की आवश्यकताओं के अनुकूल विभिन्न विधियों और सामग्रियों का उपयोग करना।

**शिक्षक निम्नलिखित द्वारा सीखने को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी की क्षमता के बारे में अपनी जागरूकता प्रदर्शित करते हैं–**

– छात्र सीखने को अधिकतम करने के लिए उनके निर्देश में प्रौद्योगिकी को एकीत करना।

**5. शिक्षक अपने अभ्यास पर विचार करते हैं,**

**शिक्षक छात्रों के सीखने का विश्लेषण करते हैं–**

– छात्रों के सीखने में सुधार के लिए क्या किया जा सकता है, इसके बारे में विचार प्रदान करने के लिए डेटा का उपयोग करना।

**शिक्षक पेशेवर विकास को अपने पेशेवर लक्ष्यों से जोड़ते हैं–**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

– पेशेवर सीखने और विकास के लिए अनुशंसित गतिविधियों में भाग लेना।

**शिक्षक एक जटिल, गतिशील वातावरण में प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं–**

– शिक्षण और सीखने में सुधार के लिए विभिन्न शोध–सत्यापित दृष्टिकोणों का उपयोग करना।

**निष्कर्ष–** आदर्श रूप से, शिक्षकों को निम्नलिखित दक्षताओं का प्रदर्शन करना चाहिए।

1. प्रभावी कक्षा प्रबंधन, दक्षता को अधिकतम करना, अनुशासन और मनोबल बनाए रखना, टीम वर्क को बढ़ावा देना, योजना बनाना, संचार करना, परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना, प्रगति का मूल्यांकन करना और निरंतर समायोजन करना। सकारात्मक संबंधों, सहयोग और उद्देश्यपूर्ण सीखने को बढ़ावा देने के लिए कई रणनीतियों को नियोजित किया जाना चाहिए। समय, स्थान और गतिविधियों को व्यवस्थित करना, असाइन करना और प्रबंधित करना उत्पादक कार्यों में छात्रों की सक्रिय और न्यायसंगत भागीदारी सुनिश्चित करना चाहिए।

2. प्रभावी शिक्षण अभ्यास, विभिन्न .ष्टिकोणों, सिद्धांतों, ''जानने के तरीकें'' और विषय वस्तु अवधारणाओं के शिक्षण में पूछताछ के तरीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एकाधिक शिक्षण और सीखने की रणनीतियों को सक्रिय सीखने के अवसरों में छात्रों को संलग्न करने में मदद करनी चाहिए जो सीखने के संसाधनों की पहचान करने और उपयोग करने की जिम्मेदारी लेने में मदद करते हुए महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान और प्रदर्शन क्षमताओं के विकास को बढ़ावा देते हैं।

3. प्रभावी मूल्यांकन, औपचारिक परीक्षणों को शामिल करना क्विज के जवाब छात्रों ने क्या सीखा है। यह समझने के लिए कक्षा असाइनमेंट, छात्रों के प्रदर्शन और परियोजनाओं का मूल्यांकन और मानकी.त उपलब्धि परीक्षण। मूल्यांकन रणनीतियों को विकसित किया जाना चाहिए जिसमें शिक्षार्थियों को स्व–मूल्यांकन गतिविधियों में शामिल किया जाए ताकि उन्हें उनकी ताकत और जरूरतों के बारे में पता चल सके और उन्हें सीखने के लिए व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

4. प्रौद्योगिकी कौशल, यह जानना कि वर्तमान शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कब और कैसे करना है, साथ ही छात्र सीखने को अधिकतम करने के लिए प्रौद्योगिकी का सबसे उपयुक्त प्रकार और स्तर।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Buharkova, O. V., Gorshkova, E. G. Image of the leader: technology of creation and promotion. Training programme. Saint-Peterburg, 2007.
2. Competence (human resources). Wikipedia. The Free Encyclopedia website. Retrieved in February 2021 from http://en.wikipedia.org/wiki/Competence_%28human_resources%29.
3. Conceptual Framework: Preparing the Future-Ready Educator. Official website of Department of Education at Davidson College. Retrieved in February 2021 from http://www.davidson.edu/academic/education/framework.html.
4. Diagram of teaching. Macmillan publisher website. Retrieved in January 2021 from http://www.mindseries.net/upload/assets/4/assets/3996/2950b6162255a6a6c6c875b0346f8d9c4e408e99/Spode_Diagram_graphic.pdf.
5. Ivanitsky, A. T. Training of personnel development in the educational collective: methodological guide. Saint-Peterburg, 1998.
6. Kan-Kalik, V. A., Nikandrov, N. D. Pedagogical creativity. Moskov, 1990.
7. Shmelev, A. G. Psychodiagnosis of personnel characteristics. Saint-Peterburg, 2002.
8. Teacher competence in higher education. The chapter from book. Retrieved in February 2021 from http://www.egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/24676/1/Unit6.pdf

*****